Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

भोजपुरी संस्कृति में भोजपुरी पत्रकारिता के प्रासंगिक्ता

डॉ0 रविकान्त

पत्रकारिता एगो आधुनिक विद्या का साथे रोचक आ प्रासंगिक विषय वस्तुअन से भरल–पूरल होला जवन समय समाज के प्रति सजग रह के समय बोध का साथे दायित्व बोद्य के अभास सफलता पूर्वक करेला। पत्रकारिता के शुरूआत एगो मिशन का रूप में भइल। जवन आज व्यवसाय बन चुकल बा। एकरा लोकप्रियता का नींव में जवन शिल्प बा ऊ बड़–बड़ हथियारो के परास्त कर देला। ई पत्रकारिता भारत के आजादी में ब्रह्मस्थ के काम कइले रहे। कहल जाव त अतिशक्ति ना होई। अकबर इलाहाबादी एही रूप के अभिव्यकित देत कहले रहस–

''खीचो न कामानो को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकलो।।

भोजपुरी पत्रकारिता भोजपुरी भाषा साहित्य के समृद्धि आ ओकर भाषित संस्कृति, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, दृष्टिकोण से अचूक आ प्रासंगिक बा। भोजपुरी पत्रकारिता के अलग–अलग स्वरूप का साथे विशेष स्वरूपण के चर्चा कइल जाव त ओह में साहित्यिक आ सूचनात्मक पहलू के विशेष महत्व बा। भोजपुरी पत्रकारिता के स्वार्मिण सफर आज 100 साल पार कर चुकल बा। बाकिर एकर स्वरूप आ शिल्प अबहूवो साहित्यिक बा। भोजपुरी पत्रकारिता के महत्वपूर्ण क्रांति भा विशेष तथ्यन पर प्रकाश डालल जाव त कुछ विचार सोझा आई। जवना के निम्नांकित रूप में दर्शावल जा सकेला।

1. भोजपुरी पत्रकारिता के सृजन।
2. सांस्कृतिक पहचान के रूप में।
3. वर्तमान समय में भोजपुरी पत्रकारिता के सांस्कृति दशा–दिशा।

भोजपुरी पत्रकारिता के देन :– भोजपुरी पत्रकारिता भोजपुरी साहित्य के सम्पूर्ण दर्श दिखावे का दिसाई सफल रहल बा। भोजपुरी पत्रकारिता भोजपुरी साहित्य के उकेरे का साथे मजबूत करे के काम कइले बा। भोजपुरी पत्रकारिता साहित्य के हर विद्या के स्थान दिहलस चाहे ऊ प्रचलित चाहे आ प्रचलित रहल। भोजपुरी पत्रकारिता कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध का साथे जीवनी, रिपोर्ताज, लघुकथा, व्यंग्य, समीक्षा, टिप्पणी, एकांकी, नुक्कड़ नाटक, फीचर, आदि के सहज–सरल रूप पाठक के सोझा प्रस्तुत कइलस। त लोक साहित्य के संरक्षण आ संवरधन का दिसाई बहुत बारिकी से विद्यागत प्रकार के संपादित करे के सफल प्रयास कइलस। लोक गीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाटक, लोककला ओह में प्रमुख रूप से रहल।

सांस्कृतिक पहचान के रूप में भोजपुरी पत्रकारिता। भोजपुरी एगो लम्हर क्षेत्रफल लगभग 50 हजार वर्ग मिले से ज्यादा बा। त एकर भाषा–भाषी 18 से 20 करोड़ मानल जाला। मतलब जइसन एकर विशालता बा वही तरह ऐकर सभ्यता संस्कृति आ परम्परा अति प्राचीन बा। वैदिक युग से शुरू सफर केतना उथान पतन का बादो अपना अस्तित्व का दिसाई स्वंभु बन हिमालय जस खार बा। भोजपुरी साहित्य प्रतापी भोजवुंशी लोगन के गुरू महा तेजस्वी पूरोहित महर्षि विश्वामित्र जे भगवान राम के गुरू रही। त महर्षि गाधि के पुत्र रही। महर्षि गाधि जेकर नाम पर प्राचीन गांधीपुर नगर बसल रहे जवन बाद में गाजीपुर का नाम से जानल जाय लागल। प्रमाण स्वरूप गाजिपुर में आजो कौशिक गोत्रिय लोग पावल जाला। रामचरित्र के शुरूआत भोजपुरी क्षेत्र बक्सर से महर्षि विश्वामित्र द्वारा संचालन भइल रहे। अहिल्या के तरपन आ तारका राक्षसी के वध बक्सर में ही भइल रहे। जवना के परिणाम अहरोली गाँव जहा अहिल्या देवी के मंदिर बा त बक्सरे में तारका नाला प्रवाहित होला। जवना के संबंध में तारका वध के समय निकलल रक्त से मानल जाला। एकरा अगला कड़ी में राजा धनवन्ती जेकर संबंध बनारस नगरी से रहल। ऊ राजश्री दिशा–दशा के अवतार का रूप में जानल जालन। जेकरा के शैल्य चिकित्सा के प्रर्वत्तक स्वना महायन सुसष्ति जे राज धनवंतरि के मित्र रहस। आचार्य सुसृति महर्षि विश्वामित्र के सुपुत्र रही त राजा दुष्यंतजे उनकर पौत्र रहस। जेकर पुत्र सम्राट भरत जेकरा नाम पर भारत वर्ष रखल गइल। अगीला कड़ी में भगवान बुद्ध जेकर विद्ववता आ त्याग के सम्पूर्ण दुनिया लोहा मनलस आ उनका सान्धि में आके ज्ञान आ शीर्षयता प्राप्त कइलस। ओह महापुरूष के जन्म–मरण आ पहीला उपदेश जवन सारनाथ में भइल। ई सब क्षेत्र भोजपुरिया सामाजिक संस्कृति आ धार्मिक परिवेश से भरल पूरल रहे। त चन्द्रगुन्त मौर्य जे भारतीय राजनैतिक व्यवस्था के भौगोलिक स्तर पर एगो मजबूत भारत राष्ट्र के अउर सबल बनवलन। आगे के संस्कृतिक आ राजनैतिक व्यवस्था का दिसाई चक्रवर्ति सम्राट अशोक जेकर संबंध गोरखपुर देवरिया से रहल त शेरशाह के सासाराम से। वीरकुँवर सिंह महाराणा प्रताप जे अपना राष्ट्र क्षेत्र आ सभ्यता संस्कृति आ स्वतंत्रता का दिसाई जीवन के अंतिम घड़ी तक लोहा लेत प्राण त्याग दिहल लोग त भोजपुरी साहित्य के साथे भोजपुरिया संत लोग जे अपना हृदय में एह क्षेत्र के सम्पूर्ण यशो गाथा पारस पत्थर जस एक पीढी से दूसरा पीढ़ी के देत गइल लोग। जवना में गोरखनाथ, कबीर दास, धरनी दास, दरिया दास, गुल्ला साहब, गुलाल साहब, शिवनारायण जी टेकमन राम, भिन्नत राम, किन्ना राम त लक्ष्मी सखी, रूप कला जी, कमता सखी जइसन संत सागर भइल लोग त विश्व स्तर पर आपन अमित पहचान बनावे वाला साहित्यकारन में भारतेन्दु, हरिशचन्द्र, प्रेमचन्द्र, जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य शिवपूजन सहाय पंडित, राहुल संस्कृतायन, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पंडित रामाधार शर्मा, राधिका रमण प्रसाद सिंह, डॉ0 सच्चितानंद सिन्हा, काशी प्रसाद, जयशववाल, डॉ0 राजेन्द्र

प्रसाद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, किशन महाराजा, बिरजु माहाराज, समता प्रसाद, कंठ महाराज, विसिमिल्ला खान जइसन भोजपुरिया परिवेश आ संस्कार संस्कृति से जनमल लोग जे सम्पूर्ण दुनिया में आपन पहचान बनवलस। भोजपुरिया संस्कृति समरस संस्कृति के एगो अइसन धरातल बा जवना पे उत्पन्न कवनो विषय वस्तु का दिसाई विशेष रहल। एकरा भीतर सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय बात साथ में गंगा जमुना तहजीब के जीवन दर्श देखे के मिलेला। ऊ दुनिया के कवनो क्षेत्र में ना लउकी ना भेटाई। भोजपुरिया संस्कृति दोसरा के मान–सम्मान आहार–व्यवहार, आदान–प्रदान, धर्म–अस्था, कर्म विश्वास का प्रति श्रद्धा रखे ला त अपना राष्ट्र, क्षेत्र सभ्यता संस्कृति का संगे खेलवाड़ के अनदेखीयो बर्दास्त ना करे। एह दिसाई भोजपुरी कविता में एकर जिक्र साफतौर पर कइल गइल बा।

झुठ न बखाने जाने, छु–छात माने–जाने,
मने जाने सब के, न जाने जी हजुरियाँ।
धूरिया चढ़ावे जाने, पीठ न दिखावे जाने,
दीठ ना लगावे जाने, आन के बहुरिया।
आन पे लड़ावे जान, जान के न जाने जान,
चलले उतान जाने, तान के लउरिया। (भानु)

एही भोजपुरिया संस्कृति के बतावत रामेश्वर सिंह कश्यप जी कहले बानी ''माँ तू गंगा तोहरा तरंग पर, हमार बाँह अर्पित बा'', त भोजपुरी संस्कृति में हरेक संस्कार के आपन अलग–अलग महत्व आ परम्परा बा। भारतीय संस्कार में 16 संस्कार के जिक्र आवता जवना में जन्म से लेकर मृत्यु तक के बखान गीतन या लोक गीतन का माध्यम से गुजत पीढ़ी–दर–पीढ़ी आ रहल बा। भारतीय आ भोजपुरिया संस्कृति में हर एक छोट से बड़ पहलू के बखान मिल जाला, जवना में जीवन–मरण, धर्म–अस्था, सभ्यता, संस्कृति, कथा, गाथा, देवी–देवता, पर्व–त्योहार, जाति विशेष, श्रद्धा–सद्भाव शोर्य–वीरता, साहस–बलिदान जइसन विशेष विषय वस्तु मतलब सीधा रूप से कहल जाव की सम्पूर्ण सृष्टि के लगभग यशोगाथा भोजपुरिया संस्कृति में समाहित बा। भोजपुरी पत्र–पत्रिका एह दिसाई एह विषय वस्तुअन के विमर्शीत करत रहल उदाहरण स्वरूप भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के अधिवेशन अंक में छपल एगो आलेख में एह तथ्यन से अवगत करावल बा जवना में भोजपुरी लोक गीतन का माध्यम से भोजपुरिया संस्कृति झलकत बा।

भोजपुरी पत्रकारिता भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति के जवन मजबूत आधार दिहलस ऊ भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति का दिसाई वरदान बनल एकर सब बिन्दुअन तथ्यन के उदाहरण स्वरूप वर्णन कइल जाव त बात कुछ अउर स्पष्ट होई। जवन निम्नलिखित बा।

(1) भोजपुरी पत्रकारिता भोजपुरी साहित्य के समृद्धि आ संकलन का दिसाई कारगर माध्यम बनल। जवन यत्र–तत्र भा मौखिक चाहे अमुद्रित रचना के मुद्रित कर ओकर विद्यागत पहचान दिलवलस।

(2) भोजपुरी पत्रकारिता भोजपुरी साहित्य के संवैधानिक मान्यता दिलावे का दिसाई शोध–परक आलेख आकड़ा आ मजबूत साहित्य पड़ोस के सरकार के ध्यान अपना तरफ आकर्षित कइलस।

(3) भोजपुरी पत्रकारिता भोजपुरी साहित्य के हरेक विद्या के सम्मान देत एगो लम्हर साहित्य परम्परो कायम कइलस।

(4) भोजपुरिया सभ्यता संस्कृति के जगावे आ जुटावे का दिसाई भोजपुरी पत्रकारिता लोक कंठ में सुरक्षित शब्दन आ पंक्तियन का साथे कथा–गाथा गीत के सुनियोजित ढ़ंग से मुद्रित करवलस। जवन समय रहते सुरक्षीत संरक्षित ना कइल जाई त ऊ हर हमेशा खातिर विलुप्त हो जाई अगर बात लोक साहित्य के लोक गीतन के कई जाव त सम्पूर्ण भोजपुरिया संस्कृति भोजपुरी लोक गीतन में समाहित बा। जवना दिसाई भोजपुरी पत्रकारिता एह विषय वस्तुयन के मुद्रित कर इतिहास जोगावे के काम कइल बा। भोजपुरी लोक गीतन के एगो मजबूत आ लम्हर परम्परा के देखावत पत्र–पत्रिकन में छपल कुछ उदाहरण जवन भोजपुरिया संस्कृति का दिसाई अति महत्वपूर्ण मानल जा सकेला।

कवनो भाषा के लोक साहित्य में लोकगीतन के विशेष परम्परा होला, जवन अपना गेय प्रस्तुतीकरण खातिर जानल जाला। लोकगीतन में मानव जीवन के यथार्थ के सरल, सरस आ स्वाभाविक प्रवृत्ति के वर्णन होला, जवना में मानव समाज के पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आ ऐतिहासिक संदर्भन के समावेश होला। ई सभ गीत मानव मन के स्थायी रूप से प्रभावित करे में सहायक होला। लोकगीतन में सम्बन्ध में डॉ0 श्रीराम सिंह के विचार देखेलायक बा– 'लोक में प्रचलित लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहते हैं।'

भोजपुरी लोक साहित्य अपना भाव–भंगिमा खातिर देश–दुनिया में जानल जाला। एकर निश्चित रूपरेखा खींच के मनोरंजन, संस्कार–परम्परा आ ज्ञान–विज्ञान के शिक्षा सदियन तक लिहल जा सकेला। लोक गीतन के परम्परा विविध आ बहुआयामी होला।

लोकगीत के विधि रूप बोइस, जइसे–संस्कार गीत, ऋतुगीत, श्रमगीत, व्रत गीत, देवी–देवता के गीत, जातीय गीत आदि। लोकगीत मूलतः कवनो क्षेत्र के आमजन द्वारा गावल जायेवाला गीत होला। जवना में ओह क्षेत्र के

सभ्यता–संस्कृति, विचार, रीति–रिवाज आदि के वर्णन होला। एह में ग्रामीण जनजीवन, परम्परा आ भाव के स्वाभविक चित्रण के साथे भारतीय लोकसंगीत परम्परा के भी झाँकी मिलेला।

भोजपुरी लेाक साहित्य के लमहर भाग लोकगीत में समाहित बा। अगर भोजपुरी लोकगीतन के विविध–स्वरूप के देखल जाव त ओह में लोकजीवन आ मानवीय संवेदनार के उद्दाह आ भावना के एगो पुरान आ लमहर परम्परा के दर्शन होला। लोक के विस्तृत क्षेत्र के व्यापक प्रभाव एह सब गीतन पर लउकेला। ई सभ गीत लोक साहित्य के आ समाज खातिर अमूल्य धरोहर बाड़ी सन, जवन पिंगल शास्त्र के नियम से युक्त स्वच्छंद होले सन।

भोजपुरी लोक साहित्य जइसन भोजपुरी लोकगीत के क्षेत्र आ साम्राज्य अपरिमेय बा। एकर एक–एक शब्द आ वाक्य एगो संस्कृति–संस्कार के संजोए के काम कर रहल बा। जवना में भोजपुरिया क्षेत्र के संस्कृति के विकसित होत रहल। एकर धुन आ भाव–भंगिमा के छोट–छोट पुर भोजपुरी क्षेत्र में मजबूत परम्परा स्थापित कइलस, जवन पीढ़ी–दर–पीढ़ी विकसित होत रहल। एह दिसाई भोजपुरी पत्रकारिता प्रिंट आ इलेक्ट्रोनिक मिडिया दुनो सहायक बनल। प्रिंट मीडिया भोजपुरी पत्र–पत्रिका का माध्यम से भारतीय आ भोजपुरिया संस्कार, संस्कृति बचवलस त इलेक्ट्रोनिक मीडिया आकाशवानी, दूरदर्शन, निजी टेलीविजन, इन्टरनेट, बेब पोर्टल, फेसबुक, यूटुब, वाट्सअप जइसन तकनीक सम्पन्न जनसंचार का माध्यम से भोजपुरिया संस्कृति के नैतिक ऊर्जा आमजनमानस तक पहुचावे में सफल माध्यम बनल।

(5) भोजपुरी पत्रकारिता में छपल लोकगाथा, लोककथा आ लोक नाटक के उदाहरण देखल जाव त एह पर कई पत्र–पत्रिका में अलग–अलग विशेषांक छपल बा। समकालीन भोजपुरी साहित्य के लोक गाथा, विशेषांक के देखल जाव त एह में नाक के बेसर में जड़ी, हितू कुअर प्रतापगढ़ के राजा, नसट बादशाह, बहुअईया का खाई का पीही का लेके परदेश जाई। नीर पानी पीयब की घरे जाइब, लक्ष्मी के बास, बिल्लार खोवकी, कौवा हकनी, विरहा के जोर, उजड़ना बसंवना, छोवड़ा वीर, लोक कथा बात बखरा, शंख देवता जइसन लोक कथा के प्रकाशन भइल बा। एही तरे सैकड़न लोककथा पत्र–पत्रिका के विषय वस्तु बनल जवन भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति के गवाह बनल।

(6) भोजपुरी भाषा साहित्य के संजोए आ भोजपुरी संस्कृति के आमजन मानस तक सुलभता से परोसे के काम पत्रकारिता कइलस। जवना में प्रमुख रूप से बाबू कुँअर सिंह, अल्हा, लोरिक, विजय मल, विहुला, सोठी बिरजाभार, राजा भरथरी, शोभनायका बनजारा, राजा गोपीचन्द आदि प्रमुख रूप से बा। जवना में भोजपुरिया समाज आ संस्कृति का साथे इतिहास सोगहग धरातल विद्यमान बा। भोजपुरी के प्रमुख लोकगाथा बा। जवन भोजपुरी पत्र–पत्रिका में अक्सर प्रकाशित होत रहत बा। उदाहरण स्वरूप–

भोजपुरी संस्कृति आ भोजपुरी पत्रकारिता

अइसन हजारन रचना जवन भोजपुरी भाषा साहित्य का साथे संस्कृति के बखान करत पत्र–पत्रिका में मिल जाई जवना में भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति के हर एक पहलू प सूक्ष्म अवलोकन कइल गइल बा। भोजपुरी पत्रकारिता एह दिसाई एगो अइसन माध्यम बा जवन गाँव गवई से होत सम्पूर्ण संसार में प्रर्दशीत भइल आज महेन्द्र मिसिर आ भिखारी ठाकुर के रचना देश–विदेश में आपन दस्तक देले बा। भोजुपरी पत्रिका में भोजपुरी भाषा आ संस्कृति प छपल आलेख में भोजपुरी गाथा, भोजपुरी कथा, भोजपुरी लोकगीत, भोजुपरी के आन्दोलनात्मक, गीत का रूम में रघुवीर नारायण के बटोहिया, मनोरंजन प्रसाद के 'फिरंगीया', शफियाबादी जी के 'मितवा', भिखारी ठाकुर के 'विदेशिया', महेन्द्र मिसिर के 'पूर्वी के धाह', का साथे संस्कार गीत, पर्व गीत, श्रमगीत, जाति गीत आदि प्रमुख रूप से भोजुपरी पत्र–पत्रिका के विषय वस्तु रहल। जवन अपने आप में कई विषय वस्तु से जुड़ के सम्पूर्ण शोध के विषय बा। भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति के अथाह भण्डार आ विकाश क्रम के एक अध्याय में समीटल असंभव बा एह दिसाई एह अध्याय में भोजपुरी संस्कृति के आसिंक आ विशेष झलक जवन भोजपुरी भाषा साहित्य का साथे सम्पूर्ण भारतवर्ष के बखान कर रहल बा। व्याख्या विश्लेषण दिहल जा रहल बा जवन निम्न बा।

भोजपुरी पत्रकारिता, भोजपुरिया संस्कृति बचावे का दिसाई हर संभव प्रयास करत रहल। चाहे ऊ प्रिंट मीडिया हो चाहे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, दूनू भोजपुरी भाषा आ संस्कृति के आपन विषय वस्तु बनवलस। भोजपुरी प्रिंट मीडिया मतलब पत्र–पत्रिका में भोजपुरिया संस्कृति का दिसाई लेख–आलेख छपल रहल। जवना में लोकसाहित्य का साथे आधुनिक आ प्रकिर्ण साहित्य के रचना का माध्यम बना के रचना प्रकाशित कइल गइल जवन पाठक खातिर भोजपुरिया सभ्यता संस्कृति समझे खातिर एगो प्रबल माध्यम बनल त, इलेक्ट्रानिक मीडिया पाठक, श्रोता आ दर्शक तीनो बनवलस। जवना के प्रबल माध्यम का रूप में रेडियो, टेलिविजन आ सोसल मीडिया रहल। आज एह सब माध्यम का सहारे भोजपुरिया संस्कृति सात समुन्दर पार के सफर कर रहल बा। आज भोजपुरिया संस्कृति के हर पहलू के चिक्र आ वर्णन आसानी से मिल जाई। भोजपुरी इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रबल साधन का रूप में आकाशवाणी रेडियो के यादगार दौर भुलावल नइखे जा सकत। रेडियो ओह दौर में सबसे लोकप्रिय रहे जवन मनोरंजन का साथे सूचना पावे के प्रबल साधन रहे। आकाशवाणी के शुरूआत भले 1927 में भइल रहे बाकिर क्षेत्रिय कार्यक्रम का दिसाई ए आगाज 1948 से भइल एकरा अन्तर्गत चौपाल कार्यक्रम होत रहे, जवना में क्षेत्रिय भाषा का रूप में भोजपुरी, मैथली आ मगही के प्रसारण होखे। जवना में वार्ता, गीत, लोकगीत, कविता, कहानी, नाटक आदि के प्रसारण होखे। भोजपुरी भाषा साहित्य आ सांस्कृतिक का दिसाई ऊ ऐतिहासिक दौर रहे जवना में भोजपुरी के विमर्श इलेक्ट्रानिक डिवाइस रेडियो से शुरू हो गइल। एह दौर में भोजपुरी

संस्कृति के जइसे पंख लाग आइल रहे आरती कार्यक्रम के अन्तर्गत लोकगीतन में हर तरह के गीत, संगीत बाजे लागल। जवना में रामचरित्र मानस पाठ (मानसपाठ), छठ गीत, होरी गीत, भइया दुज गीत, पूर्वी, चइता, कजरी, गीत निर्गुन, माई गीत, देवी गीत, किसानी गीत, झुमर, सोहर गीत, बारहमासा गीत का साथे भोजपुरी के हर पारम्पारिक गीत आ समसामयिक गीतन के प्रसारण कइल जात रहे। जवना के भोजपुरी भाषा का साथे गौर भोजपुरी भाषियो सुन के आनंदित होत रहे। रेडियो, कलाकारण में पुरूष का साथे महिला कलाकारण के लोकप्रियता खूब मिलल। जवना में शारदा सिन्हा, विध्वासिनी देवी, कमला देवी, मायारानी दास, तीजन बाई जइसन सैकड़ऋन महिला कलाकारण से पटना, गोरखपुर आ वाराणसी के रेडियो केन्द्र, गूंजित होत रहे। त पुरूष लोककलाकारण में गोपाल कृष्ण शर्मा, कुमुद अखारी, भरत सिंह भारती, मोतीलाल मंजुल, ब्रजकिशोर दुबे, रामकैलास यादव, अजीत कुमार, गुजेन्द्र नारायण, हरिराम द्विवेदी, भरत शर्मा, संतराज सिंह, राजेश, मो0 खलिल, बालेश्वर जी आदि कलाकारन के होड़ रहल। आकाशवाणी रेडियो समयानुसार अपना कार्यक्रम में सुधार करत पाइल जवना में हर तरह के गीत–संगीत आ वार्ता के जगह मिलल शुरू भइल। एह दिसाई बाद में भोजपुरी फर्म रिले केन्द्र के स्थान बनल जवना में हर दिन के देखत कार्यक्रम डिजाइन कर प्रसारित कइल जात रहे। रेडियो के शुरूआती दौर में रघुवीर नारायण के बटोहिया, महेन्द्र मिसिर के पूर्वी, भिखरी ठाकुर के विदेशिया, रमेश्वर सिंह कश्यप के लोहा सिंह के खूब लोकप्रियता मिलल। त विन्ध्यवासिनी देवी, शारद सिन्हा, कमला देवी के गीत भोजपुरिया संस्कृति के जिन्दे ना कइलस घर–घर तक पहुचावे के काम कइलस। जवना दिसाई समाज में एगो सातविक महौल बनल का साक्षर का निरक्षर सभे भोजपुरी इलेक्ट्रानिक मीडिया के आकशवाणी, दूरदर्शन के प्रसार भारती, आरती आ चौपाल के दीवाना रहे। कामकाज के बाद अगर कवनो विषय–वस्तु रहे त आह में रेडियो, टेलीविजन जवन सम्पूर्ण भोजपुरिया प्रदेश के मनोरंजन आ ज्ञान के गंगा प्रवाहित करत रहे। ओह समय के आकाशवाणी आ दूरदर्शन प प्रसारित कुछ गीतन के उदाहरण देखल जा सकेला–

एकरा साथे पटना, मुजफ्फरपुर, गोरखपुर, लखनऊ, बनारस से क्षेत्रिय प्रसारण होत रहे। गीत संगीत का साथे कथा, पटकथा चर्चा के प्रसारण कुछ नियमित त कुछ साप्ताहिक रूप में होत रहे। एकरा बाद भोजपुरी निजि चैनल के दौर आइल जवना दिसाई महुआ, भोजपुरी गंगा, संगीत भोजपुरी, दंगल, अंजन, भोजपुरी सिनेमा चैनल का माध्यम से भोजपुरिया संस्कृति आ विषय वस्तु आम जन का सोझा आइल बा, जवन भोजपुरी फिल्म गीत, संगीत का माध्यम से प्रस्तुति करत रहल।

भोजपुरी फिल्म का माध्यम से भोजपुरी भाषा संस्कार के पूरा फिचर दुनिया के सोझा आइल त कुछ सस्ता निर्माता निदेशक अपना निजि फायदा का दिसाई भोजपुरिया संस्कृति के फूहर अश्लील बना के प्रस्तुत कइलस, जवना दिसाई भोजपुरी पत्र–पत्रिका में एकर विरोध होत रहल।

फेसबुक – एह सोसल साइट (मीडिया) के अन्तर्गत भोजपुरी भाषा साहित्य संस्कृति के एगो मजबूत आधार मिलल एह दिसाई भोजपुरी के अधिकांस पत्र–पत्रिका ऑनलाईन भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति का दिसाई दुनिया भर में ज्ञान फइलावे के प्रयास कर रहल बा। आज भोजपुरी भाषा के हजारण सोसल साइट बन चुकल बा जवना प भोजपुरी के हर तरह के विषय वस्तु उपलब्ध बा। एकर प्रबल उदाहरण करोना काल में मिलल। जब लॉकडाउन का चलते हर शिक्षण आ सोसल प्रतिष्ठान बंद रहे त व्यक्ति के मनोरंजन आ एक दुसरा से साहित्य विचार आदान प्रदान करे खातिर फेसबुक प बेबीनार के आयोजन होत रहे आ आजो हो रहल बा। जवना दिसाई भोजपुरी साहित्य के जानकार विशेषज्ञ लोक एक जुट हो आपन–आपन शोध आ सृजना के आसानी से रखेला भले ऊ देश के अलग–अलग कोना में काहे ना रहो लोग बाकी फेसबुक सभे के एके मंच पर लाके भोजपुरिया संस्कृति के विकास आ बढ़ोतरी का दिसाई मजबूत माध्यम मानल जाई। एह भोजपुरी पत्रकारिता में कुछ विशेष फेसबुक साइट बा जवना में–

यूटूब :– इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रबल माध्यम का रूप में यूटूब के उपयोग अपना उत्कर्ष बा। आज यूटूब के उपयोग ग्लोबल स्तर प बा जहाँ भाषा के उपयोग का दिसाई कवनो बंदिस नइखे आज यूटूब प हर भाषा के विषयवस्तु भरल बा। अइसे कहल जाव त यूटूब आज ज्ञान के अथाह सागर बा जहाँ हर तरह के कनटेंट उपलब्ध बा। एह दिसाई भोजपुरी भाषा साहित्य आ पत्रकारिता खातिर यूटूब एगो मजबूत आ लोकप्रिय माध्यम मानल जा सकेला। आज यूटूब प भोजपुरी विमर्श का दिसाई सब कुछ उपलब्ध बा, जहाँ ऊ गद्य होखे बा पद्य दूनू के रचना मिल जाई। एह बात से इनकार नइखे कइल जा सकत के व्यवसायिक के चकाचौध में अतिमहत्वकांक्षी लोग धन कमाये के लोभ में भोजपुरिया संस्कार आ संस्कृति के साथ खेलवार कर रहल बा जवन कवनो दिसाई उचित आ सहनीय नइखे बाकिर एकरा रोग का दिसाई मजबूत आ कठोर कानून का आभाव में अश्लीलता के मकरजाल एह भाषा साहित्य आ संस्कृति के दीमक जस खोखला कर रहल बा त आखर भोजपुरिया, प्रसार भारती, आकाशवानी, राजकुमार पंडित का साथे कुछ अइसनो यूटूब चैनल बाड़ी स। जवन आपन भाषा आ संस्कृति बचावे का दिसाई सकारात्मक पहल कर ज्ञान के प्रकाश फइलल रहल बा। आज एह सब चैनल प भोजपुरी भाषा आ संस्कृति का दिसाई सैकड़न पारंपरिक गीत, संगीत उपलब्ध बा जवन भोजपुरिया संस्कृति के मानक रूप आ वास्तविक पहचान बन के प्रसारित हो रहल बा।

भोजपुरी पत्रकारिता में भोजपुरिया सभ्यता, संस्कार आ संस्कृति के सम्पूर्ण विमर्श आ यूटूब सहजे मिल जाई। इहाँ ई बात स्पष्ट कइल सही होइ कि सभ्यता आ संस्कृति दूनू एक साथ उच्चरित होला बाकिर दूनू अलग–अलग विषय के अर्थ स्पष्ट करेला। संस्कृति परम्परागत आ लोक आस्था आ विश्वास के आधार पर निर्भर करेला। जवना में जातिय जीवन के विशेष महत्व मानल जाला। हर देश के साथ एगो वृहद क्षेत्र के प्रतिनिधित्व करेला। जवन अलग–अलग हो

सकेला। भारतीय संस्कृति संसार के पुरान संस्कृति का रूप में जानल जाला। प्राचीनता मिश्र, काबुल, युनान, चीन, रोम आदि के उपर ओकर प्रभाव स्पष्ट रूप से देखल जा सकेला। जवना में मुख्य रूप से देवी, देवता, वेश, भूषा, भाषा, आस्था, पूजा–पाठ, त्योहार, खान–पान, रहन–सहन आदि में देखल जा सकेला। भारतीय संस्कृति के प्रभाव दुनिया के कई देशन में देखल जा सकेला जहाँ कमो बेस बदलाव में भारतीय संस्कृति के दस्तक बा। भारत के विश्व व्यापी समन्वयी संस्कृति देश काल, पात्र आ सम्प्रदाय का संक्रीर्ण घेरा में नइखे पन्हाइल बा। ऊ आगाध असीम बा। ऊ सम्पूर्ण मानव जाति के संस्कृति कहल जा सकेला काहे कि ओकरा विशाल घेरा में संसार के सगरी संस्कृति समाइल बाड़ी स। भारतीय संस्कृति कवनो एगो संत आ ऋषि के अवतार के आदेश ना ह बलुक नैतिक ऊर्जा मूल्यन आ आध्यत्मिक चिन्तन प आधारित सेवा, प्रेम आ सदाचार के सार्वभौमिक इमारत ह जवना में जीवन यात्रा से थकल मादल लोग विश्राम करेला। एह दिसाई भोजपुरी पत्रकारिता भोजपुरी भाषा साहित्य का साथे भोजपुरी संस्कृति के बढ़ावे आ समृद्ध करे का दिसाई मिल के पत्थर आ संजीवनी बुटी जइसन काम कइलस आ कर रहल बा।

संदर्भानुक्रम :–

1. भोजपुरी के कवि और काव्य – दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ', पेज–15
2. भोजपुरी भाषा का इतिहास – रास बिहारी पाण्डेय, पेज–28
3. भोजपुरी भाषा आ साहित्य – हवलदार त्रिपाठी सहृदय, पेज–72
4. भोजपुरी प्रकाशन के सई बरिस – पं0 गणेश चौबे पेज–27
5. भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त इतिहास – तैयब हुसैन पीड़ित, पेज–12
6. भोजपुरी गजल एक अवलोकन – डॉ0 जौहर शफियाबादी, पेज–88
7. स्मारिका – अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना, पेज–41
8. भोजपुरी साहित्य के इतिहास – डॉ0 गदाधर सिंह, पेज–72
9. लोक साहित्य – दिवाकर पाण्डेय (नालंदा खुला विश्वविद्यालय पटना)
10. वही – पेज – 164, 166, 167, 172
11. भोजपुरी आलोचना – ब्रजभूषण मिश्रा, पेज–32
12. आधुनिक भोजपुरी पत्रकारिता – डॉ0 अर्जुन तिवारी, पेज–128